रिकार्ड– इस पाप की दुनियां ..... ओमशांति प्रातःक्लास 3–6–67
रुहानी बच्चे ने अर्थ समझा। दुनियां में कोई भी अर्थ नहीं समझते। बच्चे जानते हैं कि हमारी आत्मा का लव परमपिता परमात्मा के साथ है। आत्मा अपने बाप परमपिता परमात्मा को पुकारती है। प्यार आत्मा में है वा शरीर में?अब बाप सिखाते हैं कि प्यार आत्मा में होना चाहिए। शरीर तो विनाश हो जावेगा। प्यार आत्मा से है। अब बाप सिखाते हैं कि तुम्हारा प्यार परमात्मा बाप से होना है। शरीरों से नहीं। आत्मा ही अपने बाप को पुकारती है कि पुण्यात्माओं की दुनियां में ले चलो। यहां पर है पापात्मायें ;परंतु अपने को पापात्मा समझते नहीं हैं। तुम अभी समझते हो कि हम पापात्मा थे। अब फिर पुण्यात्मा बन रहे हैं। बाप तुमको युक्ति से पुण्यात्मा बना रहे हैं। बाप बनावे तब तो बच्चों को अनुभव हो कि हम अपने बाप द्वारा बाप की याद से पवित्र पुण्यात्मा बन रहे हैं। योगबल से हमारे पाप भस्म हो रहे हैं। बाकी गंगा आदि में कोई पाप धोने नहीं जाते। मनुष्य जाकर गंगा स्नान करते हैं। मैल उतरती है ; परंतु उससे कोई पाप धुलते नहीं हैं। आत्मा के पाप योगबल से ही निकलते हैं। खाद निकलती है। यह तुम बच्चों को ही पता है और निश्चय भी है कि हम बाबा को याद करेंगे तो हमारे पाप भी भस्म होंगे। निश्चय है तो फिर पुरुषार्थ करना चाहिए ना। इस पुरुषार्थ में माया बहुत विघ्न डालती है। रुस्तम से माया भी रुस्तम होकर लड़ती है। कच्चे से क्या लड़ेगी। बच्चों को हमेशा यही खयाल रखना है कि हमको मायाजीत जगतजीत बनना है। मायाजीत जगतजीत का अर्थ भी कोई समझते नहीं हैं। अब तुम बच्चों को समझाया जाता है कि तुम कैसे माया पर जीत पहन सकते हो। माया भी तो समर्थ है ना। तुम बच्चों को उस्ताद मिला हुआ है। इस उस्ताद को भी नम्बरवार कोई विरले ही जानते हैं। जो जानते हैं उनको खुशी भी रहती है। तो याद भी बहुत करते हैं। सर्विस भी खूब करते हैं। अमरनाथ पर बहुत लोग जाते हैं। अब सभी मनुष्य कहते हैं कि विश्व पर शांति कैसे हो?अब तुम सबको सिद्ध कर बताओ कि सतयुग में कैसे सुख था, कैसे शांति थी। सारे विश्व पर शांति थी। और कोई धर्म ही नहीं था। आज से 5000वर्ष हुआ है जबकि सतयुग था। फिर सृष्टि को चक्र तो जरूर लगाना है। चित्रों से तो बिल्कुल ही क्लीयर बताते हो। कल्प पहले भी ऐसे ही चित्र बनाये थे। दिन प्रतिदिन इम्प्रूवमेंट बहुत होती जावेगी। कहीं बच्चे चित्रों में तिथी तारीख आदि लगाना भूल जाते हैं। ल.ना. के चित्र में तिथी तारीख जरूर होनी चाहिए। तुम बच्चों की बुद्धि में बैठा हुआ है कि हम स्वर्गवासी थे। अभी फिर बनना है। प्रदर्शनी में भी यह समझावें ना कि भारत में ही स्वर्ग था। अभी बच्चे पैलगांव में गये हैं। अमरनाथ पर जाते हैं। उनको भी यही समझाना है कि यह भक्ति मार्ग है। इसमें रिजल्ट कुछ भी है नहीं। भारत में गायन भी है ब्लाइंडफेथ की पूजा ,देवताओं की वा किनकी भी पूजा करते हैं तो अंधश्रद्धा से। समझते कुछ भी नहीं हैं,जानते कुछ भी नहीं हैं कि हम किनकी पूजा करते हैं। इससे फिर हमें क्या मिलेगा?सतसंग में गये ,वेद–शास्त्र सुने। फिर क्या हुआ?यह सब अंधश्रद्धा हुई ना। ....तो लगाई ;परंतु क्या मिलेगा?वो कुछ भी पता नहीं है। अब तुम समझते हो कि भक्ति मार्ग से डाके उतरते ही गये हैं और यह भक्ति मार्ग के शास्त्र वृद्धि को पाते ही रहते हैं। कितने ढेर शास्त्र पड़ते हैं। अहंकार कितना है कि हम तो शास्त्रों की अथॉरिटी हैं। वो है भक्ति की अथॉरिटी। तुम हो ज्ञान की अथॉरिटी। बाप द्वारा तुम ज्ञान की अथॉरिटी बने हो। भक्ति अब खलास हो जानी है। सतयुग–त्रेता में भक्ति थोड़े ही होती होगी। बाद में आधा कल्प भक्ति चलती है। यह भी अभी तुम बच्चों को ही समझ में आता है। आधा कल्प बाद रावण राज्य शुरू होता है। .....सारा खेल तुम भारतवासियों पर ही है। 84 का चक्र भी भारत में ही है। भारत ही अविनाशी खंड है। यह भी आगे थोड़े ही पता था। हम भी जैसे कि उल्लू थे। अब अल्लाह बनते हैं। ल.ना. को गॉड–गॉडेज कहा जाता है। कितना उंच पद है और पढ़ाई भी कितनी सहज है। यह 84 का चक्र पूरा कर फिर हम वापस जाते हैं। 84 का चक्र कहने से ही बुद्धि उपर में चली जाती है। अब तुमको मूलवतन

सूक्ष्मवतन ,स्थूलवतन सब बुद्धि में याद है। आगे थोड़े ही जानते थे कि सूक्ष्मवतन क्या होता है। अब तुम जानते हो कि वहां कैसे मूवी में बात चीत चलती है। मूवी बाइस्कोप भी निकला था। तो तुमको समझाने में भी बहुत सहज होता है। साइलेंस ,मूवी ,टाकी। तुम सब जानते हो। ल.ना. के राज्य से लेकर यहां तक का सारा ज्ञान बुद्धि में है। बाप बच्चों को समझाते हैं कि इस पुरानी दुनियां से ममत्व मिटाओ। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, बच्चों आदि को सम्भालो ;परंतु बुद्धि बाप की ही तरफ हो। कहते हैं ना कम कार डे.....बुद्धि बाप तरफ रहे। यही ओना लगा हुआ है कि हम पावन कैसे बने?बच्चों को खिलाना–पिलाना, स्नान करवाना है। बुद्धि में बाप को याद करना है; क्योंकि जानते हो सिर पर पापों का बोझा बहुत है। इसलिए बुद्धि बाप से ही लगी रहे। इस माशूक को बहुत याद करना है। माशूक बाप तो सभी आत्माओं को कहते हैं कि मुझ बाप को याद करो। यह पार्ट जो अभी चल रहा है फिर 5000वर्ष बाद चलेगा। बाप कितनी सह(ज) युक्ति बताते हैं। कोई तकलीफ नहीं। कोई कहे कि हम तो यह कर नहीं सकते हैं। हमको तो बहुत तकलीफ भासती है। याद की यात्रा बहुत मुश्किल है। अरे, अरे तुम बाबा को याद नहीं कर सकते हो। बाप को थोड़े ही भूला जाता है। बाप को तो अच्छी रीति याद करना है तब विकर्म विनाश होंगे। आकर तुम हैल्दी बनेंगे। नहीं तो बनेंगे नहीं। तुमको राय बहुत अच्छी एक टिक मिलती है। एकटक दवाई होती है ना। हम गारंटी करते हैं कि इस योगबल से तुम 21जन्मों तक कब भी रोगी नहीं बनेंगे। सिर्फ बाप को याद करो। कितनी सहज युक्ति है। भक्तिमार्ग में याद करते थे अनजानाई से। अब बाप बैठ समझाते हैं। तुम भी समझते हो कल्प पहले भी बाबा आपके पास आये थे। पुरुषार्थ करते थे। पक्का निश्चय हो गया है। हम ही राज्य करते थे। फिर हमने ही गंवाया है। अब फिर बाबा आया हुआ है। उनसे राज्य भाग लेना है। बाप कहते हैं कि मुझे याद करो और राजाई को याद करो। मनमनाभव.....अंत मते सो गते हो जावेगी। हम घर में चले जावेंगे। अब नाटक पूरा होता है। अब वापस घर में जावेंगे। बाबा आये हैं सबको ले जाने के लिए। जैसे .....को लेने लिए आते हैं ना। ब्राइड्स को बहुत खुशी होती है। हम अपने ससुराल जाती हूँ। तुम सब सीतायें हो। एक है राम। राम ही तुमको रावण की जेल से छुड़ाकर साथ ले जाते थे। लिबरेटर एक ही है। शैतान के राज्य से लिबरेट करते हैं। कहते भी हैं कि यह शैतानी राज्य है ;परंतु फिर भी यथार्थ रीति समझते नहीं हैं। अब बच्चों को समझाया जाता है समझाने के लिए बहुत अच्छी2 प्वाइंट्स दी जाती हैं। बाबा ने समझाया है कि लिख दो कि विश्व पर शांति कल्प पहले मुआफिक स्थापन हो रही है। ब्रह्मा द्वारा स्थापन हो रही है। विश्व का राज्य था तो विश्व पर शांति भी थी (ना)। विष्णु सो ही ल.ना. थे यह भी कोई समझते थोड़े ही हैं। विष्णु को और ल.ना. को और राधा–कृष्ण को और2 समझते हैं। अब तुमने समझा है। स्वदर्शन चक्रधारी भी तुम्हीं हो। शिवबाबा आकर सृष्टि चक्र का ज्ञान देते हैं। उन द्वारा हम भी अब मास्टर ज्ञान सागर बन रहे हैं। ज्ञान नदियां हो ना। यह तुम बच्चों के ही नाम हैं। भक्तिमार्ग में मनुष्य कितने स्नान करते हैं। क्या2 करते रहते हैं। बहुत दान–पुण्य आदि करते हैं। साहुकार लोग तो बहुत दान करते हैं। सोना भी दान करते हैं। कितना भटकते रहते हैं। सन्यास धर्म वालों को जाकर गुरू करते हैं। अब हम कोई हठयोगी तो हैं नहीं। हम तो हैं राजयोगी। पवित्र गृहस्थ आश्रम के थे। फिर रावण राज्य में अपवित्र बने हैं। ड्रामा अनुसार फिर बाबा पवित्र गृहस्थ आश्रम बना रहे हैं। और कोई बना नहीं सकते। सन्यासी हैं ही हठयोगी। वो तो गृहस्थ की निंदा करते हैं। जो घर–बार छोड़ते हैं तो उनको .....कहते हैं क्या कि आप यों घर–बार क्यों छोड़ते हो?और अब दुनियां कैसे चलेगी?अब तुमको क्या ऐसे2 कहते हैं क्योंकि वो तो पुराने हो गये हैं ना। और सृष्टि इतनी बढ़ गई है। खाने के लिए अनाज भी नहीं है और सृष्टि फिर क्या बढ़ावेंगे?शंकराचार्य जिसने कहा है कि चार शादी करो। उन पर तो टीका करना चाहिए।

शंकराचार्य होकर कहते हैं कि जैसे मुसलमान चार शादी करते हैं वैसे ही हिंदुओं को भी करनी चाहिए। तो संख्या बढ़े। नही तो मुसलमान बहुत हो जावेंगे तो जीत लेंगे। ऐसे2 नानसेंस बातें करते हैं। तो ऐसे2 को लिखना चाहिए ना कि ऐसे पवित्र आदमी होकर और क्या कहते हो। पहले तो खुद चार शादी करो। समझाना चाहिए जैसे कर्म हम करेंगे हमें देख और भी करेंगे। तो क्यों नहीं पहले यह शंकराचार्य ही कर्म करके दिखाते। चार शादी करके बच्चे पैदा करके दिखावे। फिर उनको देखकर उनके फालोवर्स भी करेंगे ;परंतु बच्चे ऐसी बातें लिखते ही कहां हैं। अखबार वालों से दोस्ती रखनी पड़े। समझाना पड़ता है तब ही तो डालें। श्री2 108गुरूजी ऐसी शिक्षा देते हैं। तुमको समझाने की मार्जिन बहुत है। ब्र.कु.कु. को तो सब जान गये हैं। पत्र भी गया हुआ है;परंतु कोई समझते थोड़े ही है। जज को भी लिखा था कि यह कस्म जो आप उठवाते हैं वो तो झूठी है। किसकी गाई हुई गीता है?गीता में तो कृष्ण को बिठा दिया है। कहते हैं ना हाजिर–नाजिर जान.....परंतु हाजिर–नाजिर हैं कहां?अब तुम बच्चे समझते हो कि हाजिर–नाजिर हैं ;परंतु इन आंखों से उनको देख नहीं सकते हैं। बुद्धि जानती है कि बाबा हम आत्माओं को पढ़ा रहे हैं। हाजिर–नाजिर है। तुम ऐसे लेटर्स लिख सकते हो। आपस में मिलकर एक कमेटी बनानी चाहिए जो कि लिखा–पढ़ी करे। विश्वशांति के लिए भी बताओ कि विश्व पर शांति तो बाप करवा रहे हैं। इसके कारण ही पुरानी दुनियां का विनाश सामने खड़ा है। 5000वर्ष पहले भी यही विनाश हुआ था। अब भी विनाश सामने खड़ा है। फिर विश्व पर शांति हो जावेगी। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में यह सब बातें हैं। सारे विश्व पर शांति थी। एक भारत खंड के सिवाय दूसरा तो कोई खंड ही नहीं था। अभी तो कितने खंड हैं। कहते भी हैं भगवान कहीं ना कहीं जरूर होगा ;परंतु भगवान कौन .....किसमें?यह नहीं जानते हैं। कृष्ण तो हो नहीं सकता। तुम अभी बैठे हो झूठ सुनाने वालों को पकड़ने। बाप कहते हैं झूठ मत सुनो। बाप तो मोस्ट बिलवेड है ना। उनसे वर्सा मिलता है। बाप ही स्वर्ग स्थापन करते हैं। तो जरूर पुरानी दुनियां का विनाश भी वो ही करेंगे। त्रिमूर्ति का भी चित्र तो बहुत अच्छा है। यह भी लिख दो कि विश्व में शांति कैसे ब्रह्मा द्वारा स्थापन हो रही है। शंकर द्वारा विनाश। फिर विष्णु द्वारा पालना होगी। तुम जानते हो कि सतयुग में यह ल.ना. थे। अब फिर अपने पुरुषार्थ से बन रहे हैं। नशा रहना चाहिए ना। भारत में राज्य करते थे। ऐसे नहीं कहेंगे कि शिवबाबा राज्य करके गये हैं। नहीं ,भारत को राज्य देकर गये थे। ल.ना. राज्य करते थे ना। अब फिर बाबा राज्य देने आये हैं। कहते हैं मीठे2 बच्चों मुझे याद करो और चक्र को याद करो। तुमने ही 84जन्म लिये हैं जो ब्राह्मण बनेंगे। यह भी समझ लो कि कम पुरुषार्थ करते हैं तो इसने कम भक्ति की है। जास्ती भक्ति करते हैं तो पुरुषार्थ भी जास्ती करेंगे। कितना क्लीयर करके बताते हैं ;परंतु जब तक बुद्धि में भी तो बैठे ना। तुम्हारा काम है पुरुषार्थ करना। कम भक्ति की होगी तो योग लगेगा नहीं। शिवबाबा की याद में बुद्धि ठहरेगी नहीं। कब भी पुरुषार्थ में ठंडा ना होना चाहिए। माया को पहलवान देखकर हार्टफेल ना होना चाहिए। माया के तूफान तो बहुत आवेंगे। इस पर गीत भी है। यह भी बच्चों को समझाया है कि आत्मा ही सब कुछ करती है। शरीर तो खतम हो जावेगा। आत्मा निकल गई। वो फिर मिलने की तो है ना। फिर उनको याद कर रोने.....करने से फायदा ही क्या?वो ही चीज फिर मिलेगी क्या?आत्मा ने तो जाकर फिर दूसरा शरीर लिया। अब नेहरू की राख उड़ाते रहते हैं। अब उसमें रखा ही क्या है?वो क्या करके गये हैं?कुछ भी नहीं। सब मनुष्य पापात्मा हैं। पाप ही करते रहते हैं। सीढ़ी उतरते2 पापात्मा बनते जाते हैं। बनना ही है। अब तुम कितनी उंच कमाई करते हो। तुम्हारा जमा होना है। बाकी सबका नाये (माइनस) होता जावेगा। तुमको जितना चाहिए उतना भविष्य के लिए जमा करो। ऐसे नहीं कि अंत में जाकर कहो कि अब जमा करेंगे। उरा(उस समय) लेकर हम क्या करेंगे?अभी ही काम आना है। ओम।